हर कृत्य में प्रेम २०२०!

गुरुमाई चिद्विलासानन्द

परिचय : लीलावती स्टुअर्ट

वह क्या है जिसने मुझे तब से थामे रखा है जब कई वर्षों पूर्व पहली बार मेरी माँ ने सिद्धयोग पथ से मेरा परिचय कराया था? श्रीगुरु का प्रेम। चाहे मेरे अन्दर कुछ भी चल रहा हो, मेरे मानस-पटल पर कुछ भी चल रहा हो और मेरे आस-पास के वातावरण में चाहे कुछ भी हो रहा हो, श्रीगुरु का प्रेम नित्य-उपस्थित है—मेरे अपने हृदय की निरन्तर चलती धड़कन के समान। जो कुछ भी हो रहा है, उसे मैं उत्थानकारी मानूँ या न मानूँ, जो कुछ भी घट रहा है, उसे मैं सकारात्मक दृष्टि से देखूँ या न देखूँ, वह मुझे बढ़िया लगे या न लगे, उसमें प्रेम का स्पन्दन हमेशा मौजूद होता है; यह लगातार धड़कता रहता है। जैसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में ताल होती हैं, और संगीत का जो भी टुकड़ा बजाया जा रहा हो, उसके अनुरूप होती हैं [उदाहरण के लिए, चार मात्रा की ताल, छः मात्रा की ताल, सोलह मात्रा की ताल, इत्यादि] —या जिस प्रकार, पाश्चात्य संगीत में, अलग-अलग मीटर होते हैं [ट्रिपल टाइम, कॉमन टाइम, कम्पाउन्ड टाइम], ऐसे ही श्रीगुरु के प्रेम की अपनी ही अनूठी लय होती है। स्पन्दित होने का उसका अपना ही तरीक़ा होता है। और मैं इस लय को सुनती हूँ। मैं इसे महसूस करती हूँ। यह मधुर है। यह लय मुझे सुकून देती है। यह मुझे अपने स्रोत की ओर आकृष्ट करती है, जहाँ मैं सद्गुणों को जीवन्त होता हुआ महसूस करती हूँ।

मैं श्रीगुरु के नित-नवीन अमृत रूपी प्रेम के प्रति कृतज्ञ हूँ, जो मुझे सतत पोषित करता है और कृतज्ञता के इसी भाव के साथ, मुझे सन्त वैलेन्टाइन दिवस के उपलक्ष्य में श्रीगुरुमाई की परादृष्टि और उनकी रचना का, उनकी सिखावनियों का परिचय देते हुए बहुत खुशी हो रही है, जो है : ‘हर कृत्य में प्रेम २०२०।’

कई बार मैंने यह देखा है कि श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ हम *सभी* के लिए प्रासंगिक होती हैं। चाहे हमारे व्यक्तित्व कितने ही भिन्न-भिन्न क्यों न हों, चाहे हमारे दृष्टिकोण और मत कितने ही भिन्न-भिन्न क्यों न हों, चाहे हमारी परिस्थितियाँ, हमारी पद-प्रतिष्ठा, हमारा सामाजिक स्तर कितना ही भिन्न-भिन्न हो—चाहे हमारे बीच कितनी ही हज़ारों भिन्नताएँ हों—जब हम श्रीगुरुमाई की सिखावनियों को हृदयंगम करते हैं तो वे हमें प्रेम के अनुभव तक ले जाती हैं।

श्रीगुरुमाई की सिखावनियों में जीवन गुंजित होता है; वे श्रीगुरु की शक्ति से अनुप्राणित हैं। उनमें ज्ञान जगमगाता है। उनकी गहराई में प्रज्ञान समाहित है। उन सिखावनियों से ऐसी अन्तर्दृष्टियाँ उजागर होती हैं जिनसे हमारी जागरूकता उस ख़ज़ाने की ओर उन्मुख होती है जो हमें आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुआ है। वे हमें प्रेरित करती हैं कि हम जन्म-जन्मान्तरों के अज्ञान को मिटाने का प्रयास करें और आत्मा के प्रकाश को अपना मित्र बनाएँ। यह मेरा अनुभव रहा है कि श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ हमारे सामने जो परिस्थिति होती है, उसके लिए प्रासंगिक होती हैं और हमारे परम लक्ष्य तक यानी मोक्ष तक पहुँचने में सदैव हमें सम्बल प्रदान करती हैं।

मेरी यह समझ है कि एक सबसे हितकारी कृत्य जो मैं अपने लिए कर सकती हूँ वह है यह सुनिश्चित करना कि मैं श्रीगुरुमाई की सिखावनियों पर मनन-चिन्तन करने के लिए स्वयं को समय दूँ। हर दिन, मैं अपने जीवन में श्रीगुरुमाई की सिखावनियों को उतारने के तरीक़े खोजती हूँ। यह मेरे लिए जीवन जीने का बहुत ही उल्लासपूर्ण तरीक़ा बन गया है। हर बार जब मैं श्रीगुरुमाई के वचनों पर चिन्तन-मनन करती हूँ, उनकी सिखावनियों से मैंने जो सीखा है, हर बार जब मैं उसे अपने जीवन में लागू करती हूँ तो मुझे लगता है कि मैं शीतल व निर्मल जलधारा में डुबकी लगा रही हूँ। मेरी समझ तरोताज़ा हो जाती है। मेरा दृष्टिकोण पुनः नया हो जाता है। मेरे विचार उन्नत हो जाते हैं। मैं आनन्द से भर जाती हूँ। मैं सुरक्षित, प्रेरित और शान्त महसूस करती हूँ। श्रीगुरुमाई की हरेक सिखावनी मुझे यह जानने की सामर्थ्य प्रदान करती है कि मुझे जो भी दुःख और दर्द हो रहा हो, वह प्रेम के द्वार खोल देगा। यदि किसी क्षण मुझे हताशा-सी महसूस हो रही हो या ऐसा महसूस

हो रहा हो जैसे किसी ने मुझे बहुत सताया है तो मैं जानती हूँ कि प्रेम मुझे प्रफुल्लित रखेगा और यह मुझे ईश्वर के विशुद्ध स्वरूप के दर्शन प्रदान करेगा।

श्रीगुरु के प्रेम के प्रति यह मेरा दृष्टिकोण है और इसे पढ़ने के लिए मैं आप सबको धन्यवाद देती हूँ। मैंने आपको यह इसलिए बताया ताकि इससे मैं वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के 'हर कृत्य में प्रेम' का परिचय दे सकूँ, जिसे मैं अब थोड़ा विस्तार से समझाऊँगी।

'हर कृत्य में प्रेम २०२०' पृथ्वी के लिए श्रीगुरुमाई की परादृष्टि को दर्शाता है। इस सुन्दर, सजीव, वर्णनात्मक पेन्टिंग में पृथ्वी को राहत मिल रही है—फिर, वह नवीन हो रही है, उसे नवजीवन मिल रहा है और इसमें सन्तुलन व सामंजस्य छा रहा है। ऐसे समय में जब इस पृथ्वी का बहुत-सा भाग तत्त्वों की उग्रता और रोगों की अनिश्चितता से राहत खोज रहा है, तब यह पेन्टिंग एक मरुस्थल के बीच हरित भूमि को चित्रित करती है जहाँ सब कुछ सामंजस्य के साथ कार्य कर रहा है। यह ऐसा वातावरण है, जहाँ जीवन पनपता है, जहाँ समस्त प्राकृतिक सौन्दर्य व स्वर्गीय प्रचुरता में ईश्वर का मृदुल, रचनात्मक हस्त दिखाई देता है। यदि और कुछ अनुभव न भी हो रहा हो तो भी प्रेम की इस पेन्टिंग के साथ कुछ क्षण बिताने पर आप अपने मन के शोर से राहत महसूस करेंगे।

श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ, 'हर कृत्य में प्रेम' की इन तस्वीरों [विज़ुअल्स] में समाविष्ट हैं; साथ ही इनमें विश्व के अनेक महान ऋषि-मुनियों और सन्तों, लेखकों और कवियों की सिखावनियाँ, कहावतें और सूक्तियाँ भी शामिल हैं। श्रीगुरुमाई ने जो सिखावनियाँ चुनी हैं, वे सभी प्रेम से सम्बन्धित हैं, वे प्रेम के अनेक पहलुओं व आयामों से सम्बन्धित हैं, और इस बात से सम्बन्धित हैं कि जब हम प्रेम को इस विश्व में अभिव्यक्त करते हैं तो उसका रूप कैसा होता है। प्रत्येक सिखावनी के साथ एक चित्र दिया गया है, और वह सिखावनी विशेष रूप से उस चित्र के गुणों को उजागर भी करती है जैसे कि पेड़-पौधे, पशु, रत्न, मन्दिर का कलश। ये सिखावनियाँ हमें वह सब कुछ याद दिलाती हैं कि यह संसार हमें क्या-क्या देता है और वह सब कुछ जो हमें इस जगमगाते, स्पन्दनशील ब्रह्माण्ड से सीखना है। यह पेन्टिंग और ये सिखावनियाँ एक-साथ मिलकर हमें इस बात की एक

झलक प्रदान करते हैं कि हम किस प्रकार इस संसार को एक बेहतर स्वर्गिक स्थान बना सकते हैं।

मैंने पाया है कि 'हर कृत्य में प्रेम' यह प्रकट करता है कि जब हम इन सिखावनियों को अपने जीवन में लागू करते हैं—जब हम इन सिखावनियों की सुगन्ध को अपनी सत्ता की हर कोशिका में समा जाने देते हैं—तो इसके प्रभाव तत्क्षण होते हैं। अपने सबसे उत्कृष्ट पहलू को आगे लाकर, अपने ग्रह के संरक्षण का उत्तरदायित्व लेकर और उसके वैभव को पुनः स्थापित करके, हम पृथ्वी के साथ गहराई से जुड़ पाते हैं। हम यह पहचान पाते हैं कि जीवन का हरेक क्षण वास्तव में एक अनमोल उपहार है। इसी पृथ्वी पर हम उस पथ को खोज सकते हैं जो हमें अपने पावन गन्तव्य तक ले जाता है। इस पृथ्वी पर हम सीख सकते हैं कि हम प्रेम को उसके सभी विभिन्न स्वरूपों में कैसे पाएँ, उसे कैसे पहचानें, उसे कैसे स्वीकार करें और उसकी सराहना कैसे करें। सच में, यह पृथ्वी अद्भुत है। यह हमारे अस्तित्व के लिए पोषणकारी है। यह शान्तिदायक है। सौन्दर्य की दृष्टि से यह विस्मय से भरी है।

मैं आपको व्यक्तिगत रूप से आमन्त्रित करना चाहती हूँ कि आप श्रीगुरुमाई के 'हर कृत्य में प्रेम २०२०' के साथ कार्य करें। मैं आशा करती हूँ कि ऐसा करते समय आप उस गहन प्रज्ञान को समझें जो इस पेन्टिंग में निहित है। इसके अतिरिक्त, जब हम साथ मिलकर एक ऐसे संसार की परिकल्पना करते हैं जिसमें धरती, जलाशय और समस्त जीव संरक्षित हैं—

जब हमारा संकल्प होता है,
मनोकामना होती है,
परिकल्पना होती है,
सपना होता है,
और प्रार्थना होती है
कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी

पोषित व सुरक्षित हो,

तो इससे आने वाली पीढ़ी के लिए, और उससे अगली पीढ़ी के लिए और आगे आने वाली समस्त पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण स्थापित होगा। वे अपना सर्वश्रेष्ठ अर्पित करने की उच्च आकांक्षा रखेंगे। वे अपना सर्वश्रेष्ठ देने की उच्च आकांक्षा रखेंगे। वे भी 'हर कृत्य में प्रेम' का मूर्तरूप बनने की उच्च आकांक्षा रखेंगे।

इतिहास में कई बार मनुष्यों ने यह साबित किया है कि जब हम उस सकारात्मक ऊर्जा का उचित उपयोग करते हैं, जो हममें से हरेक के अन्दर विद्यमान है, तो हम कितना कुछ हासिल कर सकते हैं। हम एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, और हम अपने वातावरण को प्रभावित करते हैं। मुझे इन्तज़ार है उस बदलाव को अनुभव करने का जो मैं जानती हूँ कि मैं तब महसूस करूँगी जब मैं विश्व में सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में उपस्थित, आप सभी के साथ 'हर कृत्य में प्रेम' का अन्वेषण करूँगी। मैं अपने मन में यह चित्र उभरता हुआ देख रही हूँ कि हम सब 'हर कृत्य में प्रेम' को एक ही समय पर देख रहे हैं। मैं अपने मन में यह चित्र उभरता हुआ देख रही हूँ कि हम सब श्रीगुरु के करुणामय प्रेम के साथ एक हो रहे हैं—और, हम अपने प्रेम की इस अवस्था तक पहुँचकर इसे समस्त विश्व को दे रहे हैं।

सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है। वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।

~ भगवान नित्यानन्द

यदि तुम प्रेम की अनुभूति करते हो तो जान लो कि तुम विशेष हो।
यदि तुम विशेष हो तो जान लो कि तुम प्रेम हो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

जैसे पृथ्वी के नीचे दबा हुआ ख़ज़ाना,
और फल में अन्तर्निहित स्वाद,
जैसे शिलाओं के बीच निहित स्वर्ण,
और तिल में छिपा तेल,

जैसे काष्ठ में छिपा अग्नि का तेज
वैसे ही, हे चेन्नमल्लिकार्जुन,
हे मल्लिकापुष्प के समान श्वेत भगवन्,
आप परब्रह्म हैं
और अस्थिर मनोभावों से ढका हुआ
आपकी सत्ता का माहात्म्य,
बोध की पहुँच के परे है।

~ अक्कमहादेवी,
भारत की बारहवीं शताब्दी की सन्त-कवयित्री

मेरी बारी भी ज़रूर आएगी :
मुझे पंख फैलने का एहसास हो रहा है।

~ ओसिप मैन्डलस्टॅम [१८९१-१९३८], रूसी कवि

जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ, उसी दिन सभी फूलों का जन्म हुआ।

~ मॅक्सिको का पारम्परिक जन्मदिवस-गीत

नीलाकाश से प्रकट होता हुआ
स्वर्गिक गंगा का शुद्ध व पावन जल,
जो ब्रह्माण्ड को दो भागों में बाँटता हुआ-सा प्रतीत होता है,
जो भगवान शिव की जटाओं में से गुज़रता है
और मेरुपर्वत की कन्दराओं व वृक्षों के बीच प्रवाहित होता है—
वह पृथ्वी पर प्रचण्ड धारा के रूप में गिरे।
वह सभी के दोषों को धो डाले तथा सागर-तटों के बाहर बहे।

देवनगरी में बहने वाली पावन नदी,
देवी गंगा अपने आशीष हम सब पर बरसाएँ।

~ आदि शंकराचार्य,
आठवीं शताब्दी के भारत के वन्दनीय ऋषि

इस दुनिया में जन्म लेने वाले हर एक व्यक्ति के लिए यह दुनिया जन्मी है।
और इसी में निहित है तुम्हारे सत्त्व व उद्देश्य का रहस्य।
हे बालक, तुम प्राचीन हो!
और पुरानी है यह दुनिया जिसे तुम अभी-अभी देख रहे हो!

~ जोवान्नि पास्कोलि, [१८५५-१९१२],
प्रतिष्ठित इतालवी विद्वान और कवि

आँसू प्रेम की पोटलियाँ हैं।

~ हवाई द्वीप की लोकोक्ति

विलो वृक्ष हरे होते हैं, उनके फूल गहरे लाल।

~ जापानी कहावत

जबसे सिद्धनाथ ने मेरा जीवन रूपान्तरित किया है,
मेरे लिए सब कुछ नया हो गया है।
मेरा मन नया है,
चन्द्रमा नया है,
सूर्य नया है।
सारा संसार
निर्मल और नया दिखाई देता है
मानो पानी से धुला हो।
जबसे मैंने तन और मन
सोऽहम् के साबुन से धो लिए हैं,
मैं नई-सी हो गई हूँ।
मैं रूपान्तरित हो गई हूँ।

अब लल्ली वह महाशक्ति
बन गई है
जो परमानन्द से कुलाँचे भरती है।

~ लल्लेश्वरी, चौदहवीं शताब्दी की काश्मीरी सन्त-कवयित्री
अंग्रेज़ी भावार्थ : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

मेरे दिन वहाँ बीते, छोटी-छोटी चीज़ों के बीच, प्रशान्ति में। और मैं आनन्दित हो गया।

~ मैनुएल डी बॅरोस [१९१६-२०१४], ब्राज़ील के कवि

अन्तर में अनन्त प्रेम है।
वह परम सत्य है।
उसी के स्फुरण से हम श्वास-प्रश्वास लेते हैं।

प्रेम के स्पन्दन के कारण ही प्राण पूरे शरीर में बहता है।
प्रेम ने ही आँखों को रूपाकारों को देखने-समझने की क्षमता दी है।
यह स्वतन्त्र प्रेम, शाश्वत आनन्द है।
यह सिद्धों का धाम है।

~ बाबा मुक्तानन्द

अपने जीवन को समय के कगार पर हल्के-हल्के यूँ नृत्य करने दो
जैसे पत्ते के कोर पर ओस।

~ रबीन्द्रनाथ टैगोर [१८६१-१९४१],
भारत के बांग्ला कवि

वर्षा से न हारा हुआ
हवा के आगे न झुकने वाला
निर्लोभी
क्रोधरहित
सदैव शान्त भाव से मुस्करानेवाला

~ कॅन्जी मियाज़ावा [१८९६-१९३३], जापानी उपन्यासकार एवं कवि

तुम्हें इस संसार की अनुभूति उसी रूप में हो जैसा यह है—भगवान के हृदय में आश्रय लिए हुए।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

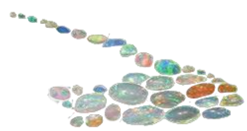

हज़ारों मील की यात्रा की शुरुआत एक क़दम से ही होती है।

~ लाओत्सु,
चीनी दार्शनिक व लेखक, ईसा पूर्व छठी शताब्दी

हृदय-पथ पर चलो।

~ जर्मन कहावत

बहुत पहले से उन क़दमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ए ज़िन्दगी हम दूर से पहचान लेते हैं

~ फ़िराक़ गोरखपुरी [१८९६-१९८२], भारत के उर्दू शायर

आगे बढ़ते रहो
और शीघ्र ही तुम
परम शिव में विलीन हो जाओगे।
लल्ली ने इसी पथ का अनुसरण किया
और उन्हें पा लिया।

~ लल्लेश्वरी, चौदहवीं शताब्दी की काश्मीरी सन्त-कवयित्री
अंग्रेज़ी भावार्थ : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

जैसे मकड़ी कोमल-से धागे को बुनती है
और पुनः उसे अपने ही अन्दर खींच लेती है,
जैसे पृथ्वी औषधियों

व अनेक आरोग्यकारी पेड़-पौधों को उगाती है,
जैसे मनुष्य के शरीर से केश व लोम उत्पन्न होते हैं,
वैसे ही उस अक्षर अर्थात् उस अविनाशी से
यह अखिल विश्व, यह व्यक्त जगत उत्पन्न होता है।

~ मुण्डकोपनिषद् १.१.७

अपने मन को शान्ति के पत्ते पर विश्राम करने दो।
अपनी दृष्टि को प्रेमपुष्प पर ठहरने दो।
बस उन्हें रहने दो और तुम उनके साथ बने रहो।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

आकाश ऊँचा है, इसीलिए पक्षी मुक्त रूप से उड़ान भर सकते हैं।

~ युआन लैन, आठवीं शताब्दी के चीन के बौद्ध भिक्षु

आरम्भ में केवल एक बीज था।
वह बीज अंकुरित हुआ और उसमें से एक पौधा निकला।

एक बीज के गर्भ में से कोटि-कोटि वृक्ष उत्पन्न हुए।
और उन वृक्षों से कोटि-कोटि फल-फूल हुए।

हे अनन्त,
हे जगव्यापी,
आपने अनेक व बहुविध रूप धारण किए हैं।
तथापि, अन्त में, हे भगवन्, आप एक ही हैं।

~श्री शान्ताराम आठवले [१९१०-१९८१],
भारत के मराठी कवि-गीतकार व फ़िल्म-निर्माता

हे अर्जुन,
मैं चन्द्रमा हूँ, आकाश में चलायमान अमृत का सरोवर हूँ।
वहाँ से असीम चन्द्र-रश्मियों की वर्षा कर,
मैं समस्त वनस्पतियों का पोषण करता हूँ।

इस प्रकार, सभी प्रकार का धान्य उपजता है
जो हर प्राणी को अन्न प्रदान करता है।

~ ज्ञानेश्वर महाराज,
तेरहवीं शताब्दी के महाराष्ट्र, भारत के सन्त-कवि

Ruhe (जर्मन) “शान्ति, स्थिरता, विश्रान्ति, निश्चलता”

हळुवार (मराठी) “मृदुल, नरम, कोमल, परवाह करने वाला”

Миру – мир (रूसी) “विश्व में शान्ति हो”

અમન (गुजराती) “अमन, सामंजस्य”

तुम्हारा ख़याल मेरी दुनिया को नया बना देता है।

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

Mary Kawena Pukui [भाषान्तर] *Olelo Noeau: Hawaiian Proverbs and Poetical Sayings* [Honolulu, HI: Bishop Museum Press, १९८३], लोकोक्ति २७५०।

रबीन्द्रनाथ टैगोर, *The Mystic Poets* [Nashville, TN: Skylight Paths, २००४], पृ. ५२।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।